ISSN 2454-8707 / VOLUME - 3, ISSUE –III, November 2017 IMPACT FACTOR 2.05

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

राम कथा के सन्दर्भ में राम की शक्ति–पूजा की भाषा

अशोक बैरागी

पी–एच. डी. रिसर्च फेलो (हिन्दी), नेट–जेआरएफ

श्री अटलबिहारी वाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

देवी अहिल्या विष्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भार

8878635259, av.bairagi@gmail.com

36, कारसदेव नगर आई.टी.आई. रोड़ इन्दौर (म.प्र.)

मै शपथ पूर्वक कथन करता हूँ कि प्रस्तुत शोध आलेख अपठित/अप्रकाशित है।

राम कथा के सन्दर्भ में उपलब्ध साहित्य में कई कृतियों की रचना गद्य एवं पद्य में की गई। उन कृतियों में आधुनिक काल में रचित कृतिवासी रामायण पर आधारित निराला कृत 'राम की शक्ति पूजा' का स्थान सर्वोपरि है। इसमें निराला ने आधुनिक युग जीवन का चित्रण राम कथा के समान्तर किया है। स्वयं निराला इस काव्य कृति में उपस्थित होते है। सम्पूर्ण आधुनिक साहित्य में राम कथा के आधार ग्रंथ के रूप में एवं साठोत्तरी राम कथा अथवा काव्य की नींव का पत्थर है 'राम की शक्ति पूजा'।

छायावादी चतुष्टयी में निराला अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। हर तरह की कविता, हर तरह के भाव विषयानुसार भाषा में रचित किये गये हैं। निराला को विविधता का कवि कहा गया है। भाषा के स्तर पर निराला बांगला, संस्कृत अंग्रेजी से होते हुए हिन्दी में दाखिल हुए और सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को नवजीवन प्रदान किया। निराला की प्रसिद्ध रचनाओं में 'राम की शक्ति–पूजा' का अपना विशिष्ट स्थान है। वस्तुतः यह लम्बी कविता राम के जीवन का वर्णन न होकर निराला के संघर्षमय जीवन की झॉकी ही है–

"धिक् जीवन को जा पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।
जानकी ! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम जो न थका।"

इन पंक्तियों में निराला का सम्पूर्ण जीवन राम के माध्यम से झलकता है। यहॉ वास्तविक संघर्ष कवि के हृदय में हैं कविता तो केवल माध्यम है। राम शक्ति की साधना कर रहे हैं और प्रश्न यह है कि वह विजयी होंगे या नहीं। निराला का रचना कर्म भी इसी तरह संघर्ष करता रहा। 'जुही की कली' (1916) से लेकर 'राम की शक्ति–पूजा' तक निराला का कवि बार–बार बोला है। निराला कृत कवितओं में आक्रोश एवं विद्रोह की प्रवृत्ति है, जिसे निराला के श्रेष्ठ आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा ने 'ओज'

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

और 'औदात्य' कहा है जीवन परिस्थितियों के घात–प्रतिघात से निराला उद्‌बुध, सचेत, जागरूक कवि के रूप में स्थापित हुए। समाज की विषमताओं, शोषण, अन्याय, अत्याचार के विरूद्ध वे जीवनपर्यन्त संघर्षरत रहे। पूंजीवादी समाज की विषमता के कारण उनके मन में गहन वेदना, टीस एवं छटपटाहट अनुभूत होती थी। सामाजिक आर्थिक विषमता के विरूद्ध वे प्रभावी आवाज उठाते है। उनके काव्य का मूल स्वर विद्रोह भावना एवं क्रांति से युक्त है। उनका आक्रोश उनकी भाषा में भी सहज दिखाई देता है।

भाषा के स्तर पर अहिन्दी भाषी होने के बावजूद उन्होंने हिन्दी सीखी और हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपनी समृद्ध, सटीक एवं शुद्ध हिन्दी से हिन्दी के नेताओं को मुहंतोड़ जवाब दिया। उनकी भाषा (हिन्दी,बांगला) में संस्कृत भाषा की प्रधानता भी परिलक्षित होती है। यह प्रधानता अंग्रेजी भाषा के विरोध के कारण नहीं दिखाई देती बल्कि यह उनकी भाषा पर अधिकार को परिलक्षित करती है। डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी के अनुसार–'' **हमारी यह धारणा नितांत भ्रमपूर्ण है कि 19 वीं शती के पण्डितवर्ग ने अंग्रेजी से टक्कर दिलाने के लिए बंगला आदि नभाआ भाषाओं को संस्कृत शब्दावली से लादना आरम्भ किया।**''[1]

भाषा की समस्या सभी श्रेष्ठ कवियों के समक्ष विद्यमान रहती है। कवि की प्रतिभा केवल नई वस्तु का उन्मेष नहीं करती, वह उसके अनुरूप भाषा का नयाय विन्यास भी करती है। नवीन विन्यास के द्वारा प्रत्येक श्रेष्ठ कवि भाषा पर अपनी मुद्रा अंकित करता है। छायावाद के युग में नई चेतना भूमियों की अभिव्यक्ति के लिए कवियों ने जिस गंभीरता से भाषा–निर्माण के प्रयत्न किए है। उसके मध्य में भाषा–प्रयोगों के वैविध्य की दृष्टि से निराला सबसे आगे है। किसी एक हद के अन्दर भाषा की प्रकृति कभी बंध नही सकी। किसी भी भाषा के भीतर उसका मुक्त रूप अवष्य दृष्टिगोचर होगा। निराला की कविताओं में यह अवश्य प्रतीत होता है। हिन्दी भाषा की प्रकृति से उन्हें कितना गहरा परिचय था, यह हिन्दी की विशिष्ट ध्वनियों के संबंध में उनके वक्तव्यों से भली–भॉति स्पष्ट हो जाता है। निराला के अनुसार '' हमारे साहित्य में धीरे–धीरे अब यह विचार जोर पकड़ता जा रहा है कि हमें बहुत सीधी भाषा को प्रयोग करना चाहिए, यद्यपि अभी मुश्किल और ठीक–ठीक मुश्किल लिखने की दो–एक को छोड़कर किसी भी साहित्यिक को तमीज नहीं है। अभी हिन्दी के लिए कुछ भी निश्चित नहीं है। 'राम की शक्ति–पूजा' का आरंभ ही अनिश्चित पंक्तियों से होता है, जो जीवन की विसंगतीयों को प्रकट करती है। कुछ भी सार्थक नहीं हैं, कोई हल नहीं है और नहीं कोई अंत है केवल अनिश्चितता–

''रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र पर लिखा अमर,
रह गया राम–रावण का अपराजेय समर।
आज का तीक्ष्ण–षर–विधृत–क्षित्र–कर, वेग, प्रखर,

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

शत–षेल–सम्वरण–षील नील – नभ गर्जित – स्वर।
प्रतिपल – परिवर्तित व्यूह, – भेद – कौषल – समूह,
राक्षस – विरूद्ध – प्रत्यूह – क्रुद्ध – कपि – विषम – हूह।''

यहॉ निराला ने युद्ध के वर्णन में नादात्मकता, वेगात्मकता और दृष्यात्मकता पर बल दिया है। वीर, भयानक एवं रोद्र रसों का का परिपाक कर बिम्ब निर्माण में गाढ़ बंध, सघन पदावली एवं भाषा की ध्वन्यात्मकता पर बल दिया है। कवि ने चमत्कार सृष्टि के लिए भाववाचक संज्ञाओं जैसे– राघव–लाघव, रावण–वारण, विकल–दल का प्रयोग कर वाक् सौन्दर्य को बढ़ाया है। संस्कृत निष्ठता एवं लाक्षणिकता सर्वत्र व्याप्त है। इस कविता का अधार कृतिवासी रामायण रहा है, परन्तु यह श्री रामचरितमानस से भी प्रभावित दिखाई देती है।

निराला बांगला भाषी होने के बाद भी संस्कृत और हिन्दी के विद्वान थे। उनकी इस प्रतिभा ने उन्हें हिन्दी के मस्तक की शोभा बढ़ाने के लिए अग्रसर किया। हिन्दी भाषा को समृद्ध करने में अनेक भाषाओं के साथ बांगला का भी अविस्मरणीय योगदान है। बांगला के कई प्रमुख कवियों ने अपने साहित्य सृजन से हिन्दी को नई दृष्टि प्रदान की है। गुरूदेव रविन्द्र नाथ टेगौर से लेकर बंकिमचन्द्र चटर्जी से होती हुई यह परम्परा शरतचन्द्र तक पंहुची। डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपने ग्रंथ में इसका विशेष उल्लेख किया है– **''उत्तर भारत की भाषाओं, ब्रजभाषा और हिन्दी को बंगाल का सहज सद्भाव प्राप्त हुआ। सारे देश को कम–से–कम उत्तर भारत के लोगों को एक सूत्र में बॉधने वाली शक्ति के रूप में हिन्दी की सम्भावनाओं के प्रति सबसे पहले बंगाल के राष्ट्रीय नेता जागरूक हुए और उन्होंने अपने बंगला लेखों में इस बात का समर्थन किया....''** [2]

'राम की शक्ति–पूजा' की इन पंक्तियों में कोमलकांत पदावली है, जिसमें फ्लैष बैक प्रविधि का उपयोग किया गया है। यहॉ कवि ने प्रतिकात्मक रूप से राम की मनोदषा का वर्णन किया है। भाषा कोमल, माधुर्य गुण से सम्पन्न एवं समास युक्त लाक्षणिकता से ओत–प्रोत है। उपमा, श्लेष, परिकरांकुर, विशेषण–विपर्यय, मानवीकरण, अनुप्रास एवं रूपक अलंकारों का प्रयोग किया है। लतान्तराल मिलन के संदर्भ में श्री रामचरितमानस की पंक्ति ''लता ओर ओट तब सखिन लखाये'' दृष्टव्य है–

''देखते हुए विष्पलक, याद आया उपवन,
विदेह का, – प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन।
नयनों का – नयनों से गोपन – प्रिय सम्भाषण,
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान पतन।
कॉपते हुए किसलय, – झरते पराग समुदय,
गाते खग नव – जीवन – परिचय, – तरू मलय वलय।''

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

हिन्दी और संस्कृत भाषा के साथ–साथ हमें निराला की कविता में बांगला भाषा का प्रभाव भी दिखाई देता है, जो 'राम की शक्ति–पूजा' में भी परिलक्षित है। व्याकरण के दृष्टि से हिन्दी और संस्कृत से बांगला थोड़ी भिन्नता लिए हुए है। कहीं–कहीं बांगला हिन्दी के साथ तारतम्यता स्थापित करती दिखाई देती है तो कहीं–कहीं कुछ विरोधाभास भी नजर आता है। हिन्दी और संस्कृत में भी आपस में विरोध दिखाई देता है, परन्तु बांगला में वैयाकरणिक रूप से यह नहीं दिखाई देता। किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार–

''पठेत् का तो 'पढ़ें' हिन्दी ने कर लिया, परन्तु 'पठेयु' का 'पढ़ेजु' जैसा रूप नहीं बनाया।..... परन्तु बंगला भाषा में ऐसा वचन–भेद नहीं होता। 'आछो' एकवचन में भी, बहुवचन में भी।''[3] इस तरह बांगला अपना अलग स्थान व्याकरण में स्थापित करती है। इसलिए निराला ने बांगला के साथ संस्कृत एवं हिन्दी के साथ अपना तादाम्य स्थापित किया, जो 'राम की शक्ति–पूजा में भी दिखाई देता है।

निराला 'राम की शक्ति–पूजा' में अपनी अक्खड़ता के साथ भी प्रकट होते हैं। अपने विराट व्यक्तित्व का वर्णन वे उदात्त शैली के साथ करते हैं। यहॉ उनकी भाषा अपने चरम रूप में प्रकट होती है। साहस, बल और वीरता में लाक्षणिक शैली का प्रयोग वे बहुत चतुरता के साथ करते हैं–

''शत घूर्णावर्त, तरंग – भंग, उठते पहाड़,
जल राषि – राशे जल पर चढ़ता खात पछाड़।
तोड़ता बंध – प्रतिसंध धरा, हो स्फीत – वक्ष,
दिग्विजय – अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।''

निराला अपना आत्मप्रक्षेपण भी अपनी इस कविता में करते है। वे अपने भावों, निराशाओं, कुंठाओं और सामाजिक विदूप्रताओं का वर्णन कविता की पंक्तियों में करते हुए लिखते हैं–

''धिक् जीवन को जा पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

दासता के उस युग में हिन्दी भाषा पर अंग्रेजीयत का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। ठीक उसी प्रकार निराला की भाषा पर बांगला का प्रभाव दिखाई देता है। वे भले ही हिन्दी में कविता करते रहे, किन्तु उनके अवचेतन में गहरे दबी हुई संस्कृत पर समय–समय पर बांगला का प्रभाव देखने को मिलता है। यह उस युग की मांग थी। भाषाओं का संगम हो रहा था। विभिन्न भाषाओं के साथ लोकभाषा भी अपना स्थान साहित्य में स्थापित कर रही थी। भाषाओं का आपस में एक दूसरे से प्रभावित होना भाषा की प्रकृति बन चुका था। **''यदि हिन्दी–भाषियों की अंग्रेजी वाक्य–रचना पर हिन्दी**

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

का प्रभाव पड़ सकता है, तो संस्कृत पर उसी से मिलती–जुलती भाषा की भाव–प्रकृति का प्रभाव पड़ना बिल्कुल स्वाभाविक बात होगी।''[4]

निराला की कविता 'राम की शक्ति–पूजा जैसी नाटकीयता और किसी भी कविता में नहीं है। इसका कारण यह है कि उन्होंने जीवन की अनुभूति, निराषा और पराजय को नाटकीय रूप दिया है। राम सदा साधन की खोज करते रहे हैं, लेकिन कविता का अन्त पराजय की भावना में नहीं होता है। निराला एक ओजस्वी कवि तो थे ही साथ ही भाषा पर भी उनका एकाधिकार था। जीवनभर सीखते रहे स्वयं का मॉजते रहे और अपनी जमीनी हकीकत से जुड़े रहे। **''आधे कलकतिया बाबू, आधे गढ़ा–कोला के किसान, अर्द्धनारीश्वर के समान निराला ने एक तरफ 'मतवाला' में 'चाबुक' फटकारना शुरू किया तो दूसरी तरफ रहस्य–रागिनी भी अलापी।''[5]** डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार इस तरह निराला बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। यही प्रभाव उनकी भाषा में भी दिखाई देता है, जो 'राम की शक्ति–पूजा में अपने चरमोत्कर्ष रूप में प्रकट होता है। इस कविता में निराला के प्राण बसते है। एक ओर उनकी भाषा में करारा जवाब है तो दूसरी ओर मधुर संगीत की रागिनियॉं।

निराला एक ऐसे समाज की सृजना में रत थे जहॉं शोषण का नाम न हो, अन्याय एवं अत्याचार का बोलबाला न हो। समता, न्याय, भ्रातभाव हो और विषमता समाप्त हो। रामस्वरूप चतुर्वेदी की सम्मति में **''आधुनिक युग के सर्वाधिक मौलिक क्षमता से सम्पन्न कवि हैं। इसका प्रमाण कवि का रचनात्मक वैविध्य स्वयं प्रस्तुत करता है। भाषा और संवेदना के जितने रंग और स्तर निराला में हैं उतने किसी अन्य में नहीं।''[6]**

निराला भाव, भाषा, छनद, लय, संगीत तथा इनके सामंजस्य से संघटित सौन्दर्य–सृष्टि के मूल्य और प्रभाव को लक्षित करने में प्रवीण है। निष्कर्षतः सापेक्षिक दृष्टि से निराला की 'राम की शक्ति–पूजा' की भाषा गद्य साहित्य की तुलना में अधिक स्पष्ट हुई है। आधुनिक राम कथा के सन्दर्भ में 'राम की शक्ति पूजा की भाषा अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इस कविता में सामाजिक, साहित्यिक, जीवनीपरक और दार्षनिक–धार्मिक विषयों का भाषा के साथ सामंजस्य बहुत अच्छी तरह से स्थापित किया है। उन्होंने प्रत्येक दृष्य को स्वनिर्मित कसौटी पर कसकर उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया को व्यक्त किया है। यह प्रतिक्रिया कथानक साहित्य के साथ भाषा, व्याकरण एवं शैली के रूप में व्यक्त हुई है। साथ ही इस रचना के द्वारा ज्वलन्त तत्कालीन सामाजिक समस्याओं से संबंधित भाषा का प्रयोग कर निराला ने भावी साहित्यकारों के लिए रामकथा के सन्दर्भ में भाषा की आदर्श भावभूमि तैयार की थी। 'राम की शक्ति–पूजा' कविता की भाषा से यह स्पष्ट हो जाता है कि निराला की भाषा पर कितनी पकड़ थी।

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

उन्होंने हिन्दी के साथ संस्कृत को भी लेकर हिन्दी साहित्य में एक नया आयाम स्थापित किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. डॉ. चटर्जी सुनीतिकुमार – भारतीय–आर्य भाषा और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 1977, पृष्ठ संख्या 146
2. डॉ. चटर्जी सुनीतिकुमार – भारतीय–आर्य भाषा और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 1977, पृष्ठ संख्या 167
3. वाजपेयी किशोरीदास – भारतीय भाषा विज्ञान, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, वर्ष 1959, पृष्ठ संख्या 253
4. डॉ. शर्मा रामविलास – भाषा और समाज, पीपुल्स पब्लिशींग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष 1961, पृष्ठ संख्या 146
5. डॉ. शर्मा रामविलास – भाषा साहित्य और संस्कृति, किताब महल, इलाहबाद, वर्ष 1954, पृष्ठ संख्या 130
6. चतुर्वेदी रामस्वरूप – हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद